

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 5: नौकरी और प्राचीन निकट पूर्व**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5, अय्यूब और प्राचीन निकट पूर्व है।

**समीक्षा [00:22-2:44]**

अगली चीज़ जिसके बारे में हमें बात करने की ज़रूरत है वह यह है कि अय्यूब और अय्यूब की पुस्तक प्राचीन निकट पूर्वी पृष्ठभूमि से कैसे संबंधित हैं जिसमें वे मौजूद हैं। हम पहले ही इस विचार के बारे में बात कर चुके हैं कि बाइबल हमारे लिए लिखी गई है लेकिन यह हमारे लिए नहीं लिखी गई है। यह हमारी भाषा में नहीं है। यह हमारी संस्कृति में नहीं है। यह उस समय से हमारी संस्कृति या किसी अन्य संस्कृति का पूर्वानुमान नहीं करता है। इसलिए, यह बीजान्टिन संस्कृति की आशा नहीं करता है और बीजान्टिन संस्कृति की बात करता है। यह मध्यकालीन संस्कृति की आशा नहीं करता। यह सुदूर पूर्वी संस्कृति या अफ्रीकी संस्कृति या अमेरिकी संस्कृति की आशा नहीं करता है।

यह किसी संस्कृति की आशा नहीं करता, लेकिन लोगों की ज़रूरतों में कुछ समानताएँ होती हैं। हमें ईश्वर को जानने की ज़रूरत है। और इसलिए, यह हमारा काम है कि हम परमेश्वर और उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को जानने में हमारी मदद करें; ईश्वर के बारे में अच्छा और सही सोचना, लेकिन यह हमारे लिए नहीं है। यह हमारी संस्कृति को नहीं मानता या हमारी संस्कृति का अनुमान नहीं लगाता।

अय्यूब की पुस्तक तब पूरी तरह से प्राचीन दुनिया में अंतर्निहित है। भले ही यह प्राचीन विश्व के किसी भी साहित्य का ऋणी नहीं है, फिर भी यह इसमें अंतर्निहित है। और उस अन्तर्निहितता का मतलब है कि बातचीत उस संदर्भ में सामने आ रही है, भले ही अय्यूब की किताब उस समय और संस्कृति के अन्य लोगों की तुलना में एक अलग परिप्रेक्ष्य ले रही हो, तब भी उस संस्कृति के संदर्भ में बातचीत हो रही है। हमने बताया है कि अय्यूब इस्राएली नहीं है। वह उज़ देश से है। तो, वह एक

इस्राएली नहीं है, लेकिन यह बहुत स्पष्ट है कि यह पुस्तक एक इस्राएली पुस्तक है। अर्थात्, इसे इस्राएलियों द्वारा इस्राएलियों के लिए तैयार किया गया है।

### **प्राचीन निकट पूर्वी (एएनई) साहित्य में पवित्र पीड़ित [2:44-6:33]**

एक पवित्र पीड़ित की स्थिति के बारे में बात करते हुए, यह उस श्रेणी में फिट बैठता है जो प्राचीन दुनिया में जाना जाता है। ऐसे बहुत से साहित्य हैं जो पवित्र पीड़ित पर चर्चा करते हैं। लेकिन अय्यूब की पुस्तक में दिए गए उत्तर प्राचीन विश्व में हमें जो उत्तर मिलते हैं, उनसे काफ़ी भिन्न हैं।

प्राचीन दुनिया में कुछ टुकड़े जो इस तरह के पैटर्न का पालन करते हैं, वह प्रारंभिक सुमेरियन टुकड़ा है, जिसे ए मैन एंड हिज गॉड कहा जाता है। वहां पीड़ित व्यक्ति अपने द्वारा किए गए किसी भी अपराध के बारे में स्वयं को अनभिज्ञ बताता है। उसकी हालत यह है कि वह एक बीमारी से पीड़ित है। वह सामाजिक बहिष्कार है। लेकिन पुस्तक के अंत में, उसके पापों की पहचान की जाती है, और वह अपने पापों को स्वीकार करता है और स्वास्थ्य में बहाल हो जाता है। उस पुस्तक के पीछे का दर्शन यह है कि कोई भी पाप रहित बच्चा पैदा नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, हर किसी में पाप होते हैं, और इसका परिणाम स्तुति के भजन में होता है, जो उस पुस्तक का धर्मशास्त्र है। एक अकाडियन मेसोपोटामिया के टुकड़े को एक आदमी और उसके भगवान के बीच एक संवाद कहा जाता है। फिर, वे किसी भी संभावित अपराध से अनभिज्ञ हैं। पवित्र पीड़ित का मूल भाव यह विचार है कि कोई ऐसा व्यक्ति, जो सतही तौर पर ऐसा दिखता है जैसे उन्होंने वह सब कुछ कर लिया है जो उन्हें करना चाहिए और वे सभी आवश्यक तरीकों से पवित्र हैं, लेकिन वे पीड़ित हैं। और इसलिए, एक आदमी और उसके भगवान के बीच इस संवाद में, यह आदमी बीमारी से पीड़ित होता है और अंततः स्वस्थ हो जाता है। वहां कोई दर्शन प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसमें किसी दैवीय कृपा का आश्वासन नहीं दिया गया है।

प्राचीन दुनिया के सबसे प्रसिद्ध टुकड़ों में से एक को लुडलुल बेल नेमेकी कहा जाता है, मैं बुद्धि के देवता की स्तुति करूंगा। यह एक अक्काडियन टुकड़ा है और इसलिए बेबीलोनियन है। यहां फिर से, हमारे पास एक ऐसा चरित्र है जो हर तरह से कर्तव्यनिष्ठ और पवित्र है, किसी भी संभावित अपराध से अनभिज्ञ है। और फिर भी, वह स्वयं को सामाजिक रूप से बहिष्कृत पाता है। देवताओं

से संचार अस्पष्ट है. वह एक बीमारी से पीड़ित है. उसकी सुरक्षात्मक आत्माओं को भगा दिया गया है। वह राक्षस उत्पीड़न के बारे में बात करता है। और इसलिए, वह इस तरह की स्थिति में है। उसकी स्थिति के समाधान में, भगवान उसके सपने में प्रकट होते हैं और उसे सूचित करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उसे शुद्धिकरण की पेशकश करने का एक तरीका दिया जाता है जिससे तृष्णीकरण होता है, और उसके अपने अपराध दूर हो जाते हैं। उसके राक्षसों को निष्कासित कर दिया गया है, वह स्वास्थ्य में बहाल हो गया है। यह, फिर, इंगित करता है कि वह वास्तव में अपराध के बिना नहीं था। इस टुकड़े के पीछे का दर्शन कहता है कि देवता गूढ़ हैं; कौन जानता है कि वे क्या कर रहे हैं। और इसका परिणाम बेबीलोन के देवता मर्दुक की स्तुति के भजन के रूप में मिलता है।

एक अंतिम को बेबीलोनियन थियोडिसी कहा जाता है। इसमें, फिर से, व्यक्ति धर्मपरायणता का दावा करता है, लेकिन उसका परिवार चला गया है, और वह गरीबी से पीड़ित है। और, इस मामले में, वास्तव में उसकी स्थिति का कोई समाधान नहीं है। वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ईश्वर के उद्देश्य दूरस्थ हैं और आप वास्तव में नहीं बता सकते कि वे क्या कर रहे हैं। यह मत व्यक्त करता है कि देवताओं ने लोगों को दुष्ट प्रवृत्ति वाला और कष्ट भोगने वाला बनाया है। और इसलिए दुनिया ऐसी ही है।

### **एनई स्रोतों में विचार [6:33-11:02]**

ये कुछ अधिक लोकप्रिय टुकड़े हैं जिन्हें हम प्राचीन दुनिया से जानते हैं। और हम देख सकते हैं कि वे देवताओं और लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली पीड़ा पर एक बहुत अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। तो, जो उत्तर हमें यहां मिलता है वह दैवीय गूढ़ता है। आप वास्तव में नहीं जान सकते कि देवता क्या कर रहे हैं। मानवता की अंतर्निहित पापपूर्णता, हर कोई पाप करता है, हर कोई अपराध करता है, और इसलिए पीड़ा में, आप कभी यह दावा नहीं कर सकते कि वह इसके योग्य नहीं थी। या फिर देवता भी इंसानियत को टेढ़ा बना देते हैं. अन्य समय में वे यह विचार व्यक्त करते हैं कि कोई भी वास्तव में वह सब कुछ नहीं कर सकता जो देवताओं को चाहिए। इसलिए, हमेशा कुछ ऐसा होगा जिससे देवता क्रोधित हो सकते हैं।

आम तौर पर, प्राचीन निकट पूर्व में दोष मढ़ने की प्रवृत्ति कम होती है। लोग वास्तव में जानकारी से वंचित हैं। देवताओं ने स्पष्ट रूप से संवाद नहीं किया है। जब आप मिस्त्रियों या बेबीलोनियों या कनानियों, या हितियों के बारे में बात करते हैं, तो देवताओं ने स्वयं को प्रकट नहीं किया है। और इसलिए, इस बारे में कोई स्पष्ट संचार नहीं है कि वे क्या चाहते हैं, क्या उन्हें प्रसन्न करेगा या क्या उन्हें नाराज करेगा। प्राचीन दुनिया में इसका कोई मतलब नहीं है।

इसके अलावा, लोगों का मानना था कि देवता काफी हद तक असंगत थे। उनके अपने एजेंडे हैं, और वे मनमौजी हैं। दिन-ब-दिन, वे अलग-अलग कार्य कर सकते हैं। और इसलिए, भले ही उन्हें लगता है कि उनकी स्थिति भगवान की उपेक्षा या क्रोध या किसी कारण या किसी अन्य कारण से मन में बदलाव का परिणाम है, उनके पास वास्तव में इस सब पर विचार करने का कोई तरीका नहीं है। प्राचीन दुनिया में, उनका मानना था कि यदि देवता क्रोधित हो जाते हैं, तो वे अपनी सुरक्षा हटा देंगे, और परिणामस्वरूप, व्यक्ति असुरक्षित हो जाएगा, राक्षसी शक्तियों या आसपास मौजूद ताकतों से खतरे में पड़ जाएगा। और इसलिए, हमने पाया कि उस टुकड़े में जिसे मैंने लुडलुल बेल नेमेकी के रूप में पहचाना है, पीड़ित ने वह सब कुछ किया है जो वह करने के बारे में सोच सकता है। उनके ये शब्द हैं : "काश मुझे पता होता कि ये चीजें किसी के भगवान को प्रसन्न कर रही हैं। जो स्वयं के लिए उचित है वह उसके भगवान के लिए अपराध है। जो किसी के दिल में घृणित लगता है वह उसके भगवान के लिए उचित है। कौन जानता है कि उसकी इच्छा क्या है स्वर्ग में देवता? अधोलोक के देवताओं की योजनाओं को कौन समझता है? मनुष्यों ने कभी भगवान का मार्ग कहाँ सीखा है?"

क्या आप उसकी हताशा सुन सकते हैं? क्या आप समझ सकते हैं कि ऐसी दुनिया में रहना कैसा होगा, यह जानते हुए कि वहाँ शक्तिशाली प्राणी हैं जो जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करते हैं और फिर भी आपको यह नहीं बताया है कि वे आपसे क्या उम्मीद करते हैं या क्या बात उन्हें प्रसन्न या क्रोधित करेगी।

सोचिए अगर आपने ऐसी नौकरी की हो, जहाँ आपका बॉस आपको जवाबदेह ठहरा रहा हो और फिर भी आपने कभी यह स्पष्ट नहीं किया हो कि आपको क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना

चाहिए। और यह कि आपको आपके अनुमानों के आधार पर दंडित या पुरस्कृत किया गया। यह बहुत असुविधाजनक है।

मुझे आशा है कि यह अंतर्दृष्टि हमें हमारे ईश्वर की एक नई सराहना करने में मदद करेगी जिसने संचार किया है और खुलासा किया है कि उसे क्या पसंद आएगा या नहीं और जिसने हमें बताया है कि वह कैसा है और कहा है कि यह दिन-ब-दिन बदलने वाला नहीं है। इससे हमें एक नई सराहना और कृतज्ञता मिलनी चाहिए जो ईश्वर ने अपनी कृपा से हमें बताई है। तो, अय्यूब जैसी पुस्तक के साहित्य के पीछे जो कुछ है, उनमें से कुछ परिदृश्य इस प्रकार हैं। परन्तु अय्यूब अब तक उनसे आगे निकल गया है; देने के लिए और भी बहुत कुछ है।

### **अय्यूब की इजरायली सोच है: 1) कोई बहुदेववाद नहीं [11:02-12:12]**

अब, मैंने बताया कि अय्यूब एक इस्राएली की तरह सोचता है, भले ही वह एक इस्राएली नहीं है। हम उसे कहां देखते हैं? उदाहरण के लिए, हम इसे इस रूप में देखते हैं कि अय्यूब का बहुदेववाद की ओर किसी भी प्रकार का झुकाव नहीं है। यह वास्तव में अजीब है क्योंकि प्राचीन दुनिया में, बहुदेववाद देवताओं के बारे में सोचने का एकमात्र तरीका है। और इसलिए, यह विचार कि ईश्वर समुदाय में है, हम ईश्वरीय परिषद के कारण शुरुआती अध्यायों में एक समुदाय का थोड़ा सा हिस्सा देखते हैं, लेकिन बहुदेववाद की ओर कोई झुकाव नहीं है। वास्तव में, अय्यूब बहुदेववाद के विरुद्ध खड़े होने के लिए कुछ प्रतिज्ञाएँ करता है। अय्यूब 31:26 में अपनी शपथ में, वह शपथ लेता है कि उसने सूर्य या चंद्रमा की ओर हाथ नहीं उठाया है। यह केवल इजराइली संदर्भ में ही समझ में आता है। आसपास के बाकी सभी लोग नियमित रूप से सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते थे और खुशी से ऐसा करते थे। वह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो कोई दोष थी। इसलिए, केवल इजराइली संदर्भ में ही यह दावा करना उचित होगा कि उसने ऐसा नहीं किया है।

### **2) कोई जिज्ञासा नहीं कि कौन सा देवता मुसीबत लाता है [12:12-12:46]**

दूसरी बात यह है कि अय्यूब इस बारे में कोई जिज्ञासा नहीं दिखाता कि किस ईश्वर ने उसके लिए मुसीबत खड़ी की है। ऐसा लगता है कि उसे ठीक-ठीक पता है कि वह किस भगवान से बात कर रहा है, और स्थिति को खराब करने या भ्रमित करने के लिए कोई अन्य व्यक्ति मौजूद नहीं है। वह

किसी अन्य देवता से कोई अपील नहीं करता। कभी-कभी यदि एक भगवान आपको परेशानी दे रहा है, तो आप इससे निपटने में मदद के लिए दूसरे भगवान से अपील कर सकते हैं। अय्यूब ऐसा कुछ नहीं करता। वह केवल एक ईश्वर के माध्यम से कार्य कर रहा है।

### 3) योग्य या अयोग्य सज़ा [12:46-14:33]

वह इस बारे में सोचता है कि उसे सज़ा मिलनी चाहिए या नहीं। अब प्राचीन विश्व में, मैंने विभिन्न टुकड़ों का उल्लेख किया है। वे किसी भी अपराध के प्रति अपनी अज्ञानता के बारे में बात करते हैं और इसलिए, कल्पना नहीं कर सकते कि देवताओं के क्रोध को भड़काने के लिए उन्होंने क्या किया होगा। लेकिन अंत में, वे अक्सर यह मान लेते हैं कि कोई अपराध हुआ है। उन्हें इसकी जानकारी ही नहीं थी। वे इससे अनभिज्ञ थे और उन्होंने किसी तरह देवताओं को नाराज कर दिया था। अय्यूब इस बारे में सोचता है कि क्या उसकी धार्मिकता या अपराधों के कारण वास्तव में उसे यह सज़ा मिली है। और यह प्राचीन निकट पूर्व में आपने जो पाया था उसकी तुलना में सोच का थोड़ा स्पष्ट स्तर दर्शाता है। विशेष रूप से, इसके दूसरे पक्ष की तरह, अय्यूब अपनी धार्मिकता के प्रति पूर्णतया आश्वस्त है। प्राचीन निकट पूर्व में, वे केवल यह सुनिश्चित कर सकते थे कि उन्होंने भगवान को खुश रखने के लिए उचित अनुष्ठान करने के लिए वह सब कुछ किया है जो वे जानते थे।

लेकिन धार्मिकता, जिस तरह से इसे अय्यूब में चित्रित किया गया है, वास्तव में प्राचीन दुनिया में मेज पर नहीं है। प्राचीन दुनिया में लोगों के दायित्व अनुष्ठानिक प्रकृति के थे, अमूर्त रूप में किसी प्रकार की पूर्ण धार्मिकता नहीं जिसे परिभाषित किया जा सके। उनकी एकमात्र धार्मिकता उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी करने में थी जिनकी मांगें बहुत प्रसिद्ध नहीं थीं। अय्यूब को अपनी धार्मिकता के बारे में काफ़ी निश्चितता है। फिर, यह इसे एक बहुत ही इज़राइली एहसास देता है।

### 4) द ग्रेट सिम्बायोसिस नॉट इन जॉब [14:33-18:24]

इसके अलावा, उससे जुड़े अय्यूब में, जिसे मैं महान सहजीवन कहता हूँ, उसका कोई सुझाव नहीं है। आइए मैं आपको यह समझाता हूँ। प्राचीन दुनिया में महान सहजीवन इस बारे में बात करता है कि देवता और लोग कैसे बातचीत करते हैं। प्राचीन विश्व में बड़े पैमाने पर, उनका मानना था कि देवताओं ने मनुष्यों को इसलिए बनाया क्योंकि देवता अपनी जरूरतों को पूरा करने से थक गए थे।

इस प्रकार सोचने पर, देवताओं को भूख लगती है, देवताओं को प्यास लगती है, देवताओं को वस्त्र की आवश्यकता होती है, और देवताओं को आवास की आवश्यकता होती है। वे काफी हद तक इंसानों की तरह हैं; उनकी जरूरतें थीं। उन्हें अपना भोजन स्वयं उगाना था, अपने खेतों की सिंचाई स्वयं करनी थी और अपने घर स्वयं बनाने थे। और यह बस थका देने वाला, थका देने वाला काम था। देवता इससे थक गये थे। और इसलिए, वे निर्णय लेते हैं, हम दास श्रम पैदा करेंगे। हम लोग बनाएंगे, और वे हमारी जरूरतें पूरी करेंगे। हम लोग पैदा करेंगे और वे खाना उगाएंगे और हमें खिलाएंगे। वे हमारे लिये सुन्दर वस्त्र बनाकर हमें पहिनायेंगे। और वे शानदार घर बनाएंगे, और वे हमें हर तरह से लाड़-प्यार देंगे। उत्तम विचार। और इसलिए, उन्होंने यही किया। इसलिए, लोगों को इसलिए बनाया गया ताकि वे देवताओं की जरूरतों को पूरा कर सकें और उन्हें लाड़-प्यार दे सकें। अब यह महान सहजीवन का एक पक्ष है: लोगों को देवताओं के लिए क्या करना चाहिए था। लेकिन निस्संदेह, इसका दूसरा पक्ष भी है, इसलिए, देवताओं को लोगों के लिए क्या करना पड़ा। क्योंकि एक बार जब वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए लोगों पर निर्भर हो गए, तो उन्हें किसी तरह उन्हें संरक्षित करना पड़ा। उन्हें पर्याप्त बारिश भेजनी पड़ी ताकि लोग देवताओं को खिलाने के लिए और खुद को खिलाने के लिए भोजन उगा सकें क्योंकि अन्यथा, वे मर जाएंगे और वे देवताओं को नहीं खिला सकेंगे। उन्हें उनकी रक्षा करनी थी ताकि आक्रमणकारी आकर उन्हें नष्ट न कर दें क्योंकि तब वे देवताओं को भोजन नहीं दे सकते थे। इसलिए, देवताओं को लोगों के लिए प्रावधान करके और लोगों की रक्षा करके उनके हितों की रक्षा करनी थी।

तो, इस तरह, यह कोडपेंडेंसी बनती है; जहां देवता लोगों को लाड़-प्यार देने, उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन पर निर्भर रहते हैं। और लोग अपनी रक्षा और भरण-पोषण के लिए देवताओं पर निर्भर रहते हैं।

यह थोड़ा सा है जहां न्याय प्रणाली में आता है क्योंकि देवता न्याय को संरक्षित करने में रुचि रखते थे। इसलिए नहीं कि न्याय किसी तरह से उनके स्वभाव में अंतर्निहित था, बल्कि इसलिए कि अगर समाज में तबाही और अराजकता और परेशानी होती, अगर समाज व्यवस्थित और न्यायपूर्ण नहीं होता, तो सभी प्रकार की समस्याएं होतीं, और लोग अपनी समस्याओं पर ध्यान नहीं दे पाते। काम।

कार्य था: देवताओं को लाड़-प्यार देना। इसलिए, यदि लोग आपस में लड़ रहे थे, यदि समाज अशांति से भरा था, तो देवताओं की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा था। इसलिए, समाज में न्याय और व्यवस्था सुनिश्चित करने में देवताओं का कुछ स्वार्थ था। तो, यह महान सहजीवन है, यह सहनिर्भरता है, पारस्परिक आवश्यकता है, जहां देवताओं को लोगों की आवश्यकता होती है, और लोगों को देवताओं की आवश्यकता होती है।

### 5) क्या अय्यूब मुफ्त में परमेश्वर की सेवा करता है ?— इस्राएली [18:24-19:51]

अब, जब अय्यूब के बारे में प्रश्न सामने रखा जाता है, तो क्या अय्यूब बिना कुछ लिए परमेश्वर की सेवा करता है? आप देख सकते हैं कि यह इस महान सहजीवन की बुनियाद पर चोट करता है। प्राचीन दुनिया में, कोई भी बिना कुछ लिए भगवान की सेवा नहीं करता था। भगवान की सेवा करने का पूरा विचार यह था कि भगवान उस उपकार का बदला चुकायें। अनुष्ठानों की पेशकश करने का उनका विचार यह था कि देवता समृद्धि और सुरक्षा लाएँ। प्राचीन विश्व में किसी ने भी बिना कुछ लिए ईश्वर की सेवा नहीं की। इससे हमें पता चलता है कि यह पुस्तक कितनी इज़राइली है क्योंकि पुस्तक में प्रश्न का आधार ही एक ऐसा आधार है जो इस बात से इनकार करता है कि महान सहजीवन हमेशा बना रहेगा या इस पर काम किया जा रहा है। केवल इज़राइल में ही आप उस दिशा में सोचना शुरू कर सकते हैं। अय्यूब एक इस्राएली की तरह सोच रहा था। महान सहजीवन में निष्काम धार्मिकता की कोई अवधारणा नहीं है।

### 6) दोस्तों के साथ अय्यूब की असहमति दर्शाती है कि वह इस्राएली है [19:51-21:56]

इसके अलावा, अय्यूब की इज़राइली सोच तब परिलक्षित होती है जब वह अपने दोस्तों के साथ असहमति में प्रवेश करता है। उसके दोस्त प्राचीन निकट पूर्वी लोगों की तरह सोचते हैं। वे सोचते हैं कि अय्यूब को परमेश्वर को प्रसन्न करने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर उसे उसके लाभ वापस दे दे। मैं इसे अपना सामान वापस पाना, अपना सामान वापस कैसे प्राप्त करना कहता हूँ। अय्यूब के दोस्तों की सारी सलाह इस बारे में है कि आपको अपना सामान वापस पाने के लिए क्या करना होगा। यदि आप ये काम करेंगे तो भगवान का क्रोध शांत हो जाएगा और आपको अपना सामान वापस मिल जाएगा। दूसरे शब्दों में, वे इस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो कहता है,

"नौकरी, यह वास्तव में सामान के बारे में है।" जबकि किताब में मुद्दा यह है कि यह सामान के बारे में नहीं है, या क्या अय्यूब वास्तव में सोचता है कि यह सामान के बारे में नहीं है? क्या अय्यूब की धार्मिकता में कोई दिलचस्पी नहीं है? अर्थात् क्या सचमुच उसकी रुचि लाभ में न होकर केवल धार्मिकता में है? अय्यूब के दोस्त उसकी रुचि को इस लाभ की ओर मोड़ने का प्रयास करते रहते हैं कि वह अपना सामान कैसे पुनर्स्थापित कर सकता है। यदि अय्यूब उनकी बात सुनता है, तो पूरी किताब बिखर जाती है। तो, दोस्त प्राचीन निकट पूर्वी लोगों की तरह सोचते हैं, और अय्यूब उस तरह की सोच को स्वीकार करने से इनकार करके अपनी तरह की इज़राइली-शैली की सोच दिखा रहा है।

तो, अय्यूब एक इस्राएली नहीं है, लेकिन वह एक इस्राएली की तरह सोचता है। वह एक इस्राएली की तरह व्यवहार करता है। और इसलिए, एक इज़राइली पाठक स्वयं को अय्यूब के दृष्टिकोण से पहचानेगा।

### 7) पुस्तक का फोकस इज़राइली है: कोई अनुष्ठानिक तुष्टिकरण नहीं [21:56-23:24]

अब, केवल इतना ही नहीं, बल्कि पुस्तक का फोकस इज़राइली है। अय्यूब न केवल एक इस्राएली की तरह सोचता और कार्य करता है, बल्कि पुस्तक का फोकस भी इस्राएली पर है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यह सोचने की कोई संभावना नहीं है कि अय्यूब की स्थिति के स्पष्टीकरण के रूप में कोई धार्मिक अपराध है। प्राचीन निकट पूर्व में ऐसा ही रहा होगा। साहित्य के उन सभी टुकड़ों में ऐसा ही है जिन्हें हमने देखा। विचार यह था कि अवश्य ही कोई अनुष्ठानिक अपराध हुआ होगा और इसलिए, कुछ अनुष्ठानिक तुष्टिकरण, कुछ अनुष्ठानिक समाधान होना चाहिए। अय्यूब की पुस्तक उस संभावना पर कोई ध्यान नहीं दे रही है। यह इज़रायली फोकस ले रहा है।

प्रभावी प्रतिक्रिया के रूप में तुष्टिकरण के बारे में कोई विचार नहीं है। विचार यह है कि किसी तरह ईश्वर अतार्किक रूप से क्रोधित है और उसे प्रसन्न करने की आवश्यकता है। यदि ऐसा होता, तो अय्यूब उसे स्पष्टीकरण के लिए अदालत में नहीं बुला रहा होता। इसलिए, उस तरह के तुष्टिकरण के बारे में कोई विचार नहीं है। उसके दोस्त चाहेंगे कि वह उन्हें खुश करे। हालाँकि, फिर भी, यह अनुष्ठानिक अर्थ में तुष्टिकरण नहीं है। किताब वह युक्ति नहीं अपनाती। इसलिए, यहां तक कि जो

मित्र प्राचीन निकट पूर्वी सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे भी कोई अनुष्ठान समाधान प्रस्तावित नहीं करते हैं।

### 8) परमेश्वर का न्याय और अय्यूब की धार्मिकता इस्राएली है [23:24-24:51]

यह विचार कि पुस्तक में रुचि है, ईश्वर के न्याय करने और अय्यूब की धार्मिकता दोनों में, यह इसे प्राचीन निकट पूर्व में सोच के मैट्रिक्स से बहुत अलग बनाता है। प्राचीन निकट पूर्व उन चीजों में रुचि नहीं दिखाएगा। देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। और इसलिए, जबकि उनका मानना है कि देवता न्याय में रुचि रखते हैं, यह विचार कि किसी तरह देवताओं को न्याय के साथ कार्य करना होगा, वास्तव में तस्वीर में नहीं है; देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। और इसलिए, यह विचार कि अय्यूब की धार्मिकता, जो प्राचीन निकट पूर्व में अपरिभाषित है, और परमेश्वर के न्यायपूर्ण कार्य चित्र में हैं, इजरायली सोच को दर्शाता है।

एक और बात जो हम किताब में देखते हैं वह यह है कि अय्यूब को शुरू से ही धर्मी घोषित किया गया है। वाह, यह प्राचीन निकट पूर्व की किसी भी चीज़ से भिन्न है कि उसे स्पष्ट घोषित किया जाएगा। फिर, यह पुस्तक की चरम सीमाओं में से एक है। आप देख सकते हैं कि कैसे यह सभी प्राचीन निकट पूर्वी व्याख्याओं को सामने ला देता है। यदि यह शुरू से ही अय्यूब को दोषमुक्त कर देता है, तो अय्यूब की पीड़ा के बारे में सभी उत्तर अब उपलब्ध नहीं हैं; वे सभी जो प्राचीन निकट पूर्व देता है।

### 9) ईश्वर का उत्कृष्ट दृष्टिकोण [24:51-25:14]

और अंत में, एक और चीज़ जो हमें किताब में इजरायली फोकस दिखाती है वह है देवता का उत्कृष्ट दृष्टिकोण, कि ईश्वर इन सबसे ऊपर रहता है। अब फिर से, आप उस पहले या दो अध्याय को कैसे पढ़ते हैं इसके आधार पर इसे कम किया जा सकता है। और हम इसके बारे में आगे बात करेंगे. लेकिन कुल मिलाकर, देवता का एक उत्कृष्ट दृष्टिकोण है।

पुस्तक के उत्तर मानव स्वभाव या दैवीय स्वभाव पर नहीं, बल्कि दुनिया में ईश्वर की नीतियों पर निर्भर हैं। भगवान कैसे कार्य करता है? और उस अर्थ में, फिर से, यह उससे बहुत भिन्न है जो हम प्राचीन निकट पूर्व में पाते हैं।

**एनई साहित्य को मित्र पदों द्वारा एक पत्री के रूप में उपयोग किया जाता है [25:14-26:32]**

अय्यूब की पुस्तक, तो मैं कहूंगा कि प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य के किसी भी टुकड़े का ऋणी नहीं है। यह प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य को एक पत्री के रूप में उपयोग करता है। यह चाहता है कि आप इसके बारे में सोचें, जबकि यह चाहता है कि इसके दर्शक दिए गए अन्य उत्तरों के बारे में सोचें क्योंकि इससे पता चलेगा कि वे कितने दिवालिया हैं। प्राचीन निकट पूर्व तब जॉब की पुस्तक के लिए एक वार्तालाप भागीदार है। इसराइली उस व्यापक बातचीत से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं। अय्यूब की पुस्तक उस वार्तालाप में प्रवेश कर रही है, लेकिन वह इसे एक विषमता के रूप में उपयोग कर रही है क्योंकि यह एक अलग प्रकार की स्थिति लेगी और एक ऐसा उत्तर देगी जो प्राचीन दुनिया में उपलब्ध नहीं था, विशेष रूप से उस तरीके के कारण जिसके बारे में लोगों ने सोचा था प्राचीन विश्व में देवता। अय्यूब के मित्र प्राचीन निकट पूर्वी सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन अय्यूब इसका विरोध करता है, और पुस्तक इसका विरोध करती है।

**सारांश: अय्यूब स्पष्ट रूप से इस्राएली है [26:32-28:32]**

तो, आइए विशिष्ट इज़राइली विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करें। सबसे पहले, कोई महान सहजीवन नहीं है। ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है, और हम इसे अय्यूब 22:3 जैसे स्थान पर व्यक्त करते हुए देखते हैं। दूसरे, ईश्वर के न्याय में रुचि है। और फिर, यह प्राचीन निकट पूर्व में उतना मजबूत तत्व नहीं होगा। एक अमूर्त अवधारणा के रूप में धार्मिकता में रुचि है। ऐसा प्रतीत होता है कि अय्यूब में व्यक्तिगत धार्मिकता की भावना है जो प्राचीन दुनिया द्वारा प्रदान की जा सकने वाली चीज़ों से कहीं आगे है। यहां किसी अनुष्ठानिक अपराध पर विचार नहीं किया जाता है या अनुष्ठानिक उपाय सुझाए या अपनाए नहीं जाते हैं, और कोई तुष्टीकरण नहीं किया जाता है। दिव्य ज्ञान एक प्रमुख विषय है और वास्तव में पुस्तक का केंद्र बिंदु है। और फिर, जो हम प्राचीन निकट पूर्व में पाते हैं उससे बिल्कुल अलग। प्राचीन निकट पूर्व में, यह केवल दैवीय अधिकार था। देवता वही करते हैं जो वे करते हैं। यहां दैवीय ज्ञान का विचार हमें यह समझने में मदद करता है कि ईश्वर का संसार को चलाना कैसा है और उसकी नीतियां कैसी हैं। इसलिए, प्राचीन निकट पूर्व के बाकी

लोग अपने देवताओं के बारे में जिस तरह सोचते थे, उससे अलग ढंग से उनके बारे में सोचने से मदद मिलती है।

तो, अय्यूब एक ऐसी किताब है जो प्राचीन दुनिया से बहुत गहराई से जुड़ी हुई है। यह प्राचीन विश्व के ज्ञान को मानता है, लेकिन यह प्राचीन विश्व में हम जो पाते हैं उससे विपरीत दृष्टिकोण रखता है। ऐसा करने से, यह हमें ईश्वर, यहोवा का रहस्योद्घाटन देता है, जो कि प्राचीन दुनिया के देवताओं में से किसी एक के बारे में दी जा सकने वाली किसी भी चीज़ से बहुत अलग है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5, अय्यूब और प्राचीन निकट पूर्व है। [28:32]